समाज और संत के बीच लोक कल्याण हेतु सेतु बननेवाला महापुण्य का भागी होता है ।
संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित
मूल्य : ₹ ४.५०

लोक कल्याण सेतु

रजि. समाचार पत्र

• प्रकाशन दिनांक : १५ जनवरी २०२५ • वर्ष : २८ • अंक : ०७ (निरंतर अंक : ३३१) • भाषा : हिन्दी • पृष्ठ संख्या : २० (आवरण पृष्ठ सहित)

धर्म सुवास विशेषांक

देवो भूत्वा देवं यजेत् ।

जैसे शिवजी निर्वासनिक हैं,
निर्भय हैं, आनंदस्वरूप हैं,
ऐसे ही तुम भी निर्वासनिक
और निर्भय होकर
आनंद में रहो ।
यही उनकी महापूजा है ।

- पूज्य बापूजी

पूज्य संत
श्री आशारामजी बापू

साँईं श्री लीलाशाहजी

धर्म का वास्तविक अर्थ क्या है ?

पूज्य बापूजी के साथ प्रश्नोत्तरी

प्रश्न : धर्म क्या है ?

पूज्य बापूजी : धर्म की परिभाषाएँ बहुत लम्बी-चौड़ी होती हैं। और धर्म तथा मत में फर्क होता है यह मूल की बात समझ लेना। धर्म को आध्यात्मिक ढंग से विचारें तो जो सबको धारण कर रहा है उस परमात्मा की ज्यों-की-त्यों मुलाकात ही धर्म का फल है। अब अपने-अपने ढंग से, अपनी-अपनी योग्यता और अपने-अपने देश-काल-युग का खयाल करके उस मुलाकात के जो रास्ते बने, यात्रा करने की जो पद्धतियाँ बनीं, वे बनीं बुद्धि से, मति से। वे हो गये मत और मत से पड़ गये मतांतर कारण कि मतियाँ एक जैसी नहीं होतीं, भिन्न-भिन्न होती हैं। **मुण्डे मुण्डे मतिर्भिन्ना।**

लेकिन जो आदि धर्म है वह एक है और उस एक में जिनकी स्थिति हो गयी, जिन्होंने उस परमात्म-तत्त्व को जान लिया अथवा उस सार आत्मसुख को पा लिया वे किसी देश में हों, किसी वेश में हों, किसी रंग में हों, किसी ढंग में हों, हम उनका इसलिए आदर करते हैं कि वे वहाँ पहुँचे हैं। भीतर से एक ढंग की स्थिति हुई लेकिन बाहर का रहन-सहन अलग-अलग हो सकता है। तो जो आत्मज्ञानी महापुरुषों का रहन-सहन है वह धर्म नहीं है।

जैसे शुकदेवजी का आचरण है महात्यागी का, कौपीन की भी परवाह नहीं, उनकी भी पूजा करते हैं। श्रीकृष्ण का आचरण है महाभोगी का, उनकी भी पूजा करते हैं। राजा जनक राज्य करते हैं, उनको भी हम वंदन करते हैं, आत्मज्ञानी थे। साँईं श्री लीलाशाहजी अत्यंत सादे पहनावे में रहते थे लेकिन भीतर से ब्रह्मनिष्ठा की महान ऊँचाई पर विराजमान थे, उनके चरणों में हम दंडवत् प्रणाम करते हैं, उनका पूजन करते हैं। रामचन्द्रजी बाली को मारते हैं, रावण को मारते हैं और राज्य करते हैं, उनकी भी पूजा करते हैं। रामजी ने बाली को, रावण को मारा इसलिए उनकी पूजा नहीं करते हैं, वे राज्य कर रहे हैं इसलिए हम पूजा नहीं करते हैं, शुकदेवजी कौपीन पहनते हैं इसलिए पूजा नहीं करते हैं... पूजा इसलिए करते हैं कि उन्होंने उस एक परमात्म-तत्त्व में स्थिति की है।

मान लो एक व्यक्ति रसगुल्ला चाहता है, दूसरा दहीबड़ा चाहता है, तीसरा सिनेमा देखना चाहता है, चौथा किसीकी जेब काटना चाहता है... ये चाह के साधन अलग-अलग हैं और सभीकी चाह की पूर्ति के लिए चेष्टाएँ अलग-अलग हैं लेकिन इन सबके पीछे एक धर्म (लक्ष्य) छुपा है। क्या ? कि सुख लेने की इच्छा है सबकी। प्राणिमात्र सुख चाहता है पर गलती यह होती है कि वह इन्द्रियों के विकारी सुख में उलझ जाता है और उस निर्विकारी सुख, आत्मसुख से वंचित रह जाता है।

वह शुद्ध सुख, आत्मसुख मिल जाय इसका जो साधन बताये उसको धर्म बोलते हैं। अब उस तक पहुँचने का सीधा रास्ता तो वेद बताते हैं और वेदों ने जो बताया उसको सनातन धर्म कहा है।

भगवान श्रीकृष्ण

भगवान श्रीराम

राजा जनक

शुकदेव मुनि

परमात्मा की ज्यों-की-त्यों मुलाकात ही धर्म का फल है। यह फल जिनके जीवन में साकार हुआ ऐसे संत-भगवंत सनातन धर्म का गौरव हैं।

मानवमात्र के लिए परम हितकारी पर्व :

महाशिवरात्रि

२६ फरवरी को महाशिवरात्रि का महापर्व है। इसकी महत्ता के बारे में पूज्य बापूजी के सत्संग-वचनामृत में आता है :

फाल्गुन कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी - यह महाशिवरात्रि है। इस दिन शिवजी लिंग रूप में धरती पर प्रकट हुए थे। धरती पर शिवलिंगों की परम्परा का जो आरम्भ दिवस है, जीव और शिव (ईश्वर) की एकता कराने में सहायक वातावरणवाला जो दिवस है वह महाशिवरात्रि है। शिवजी के विवाह का दिवस अर्थात् माया मायापति की शरण गयी, वह दिवस भी महाशिवरात्रि का है।

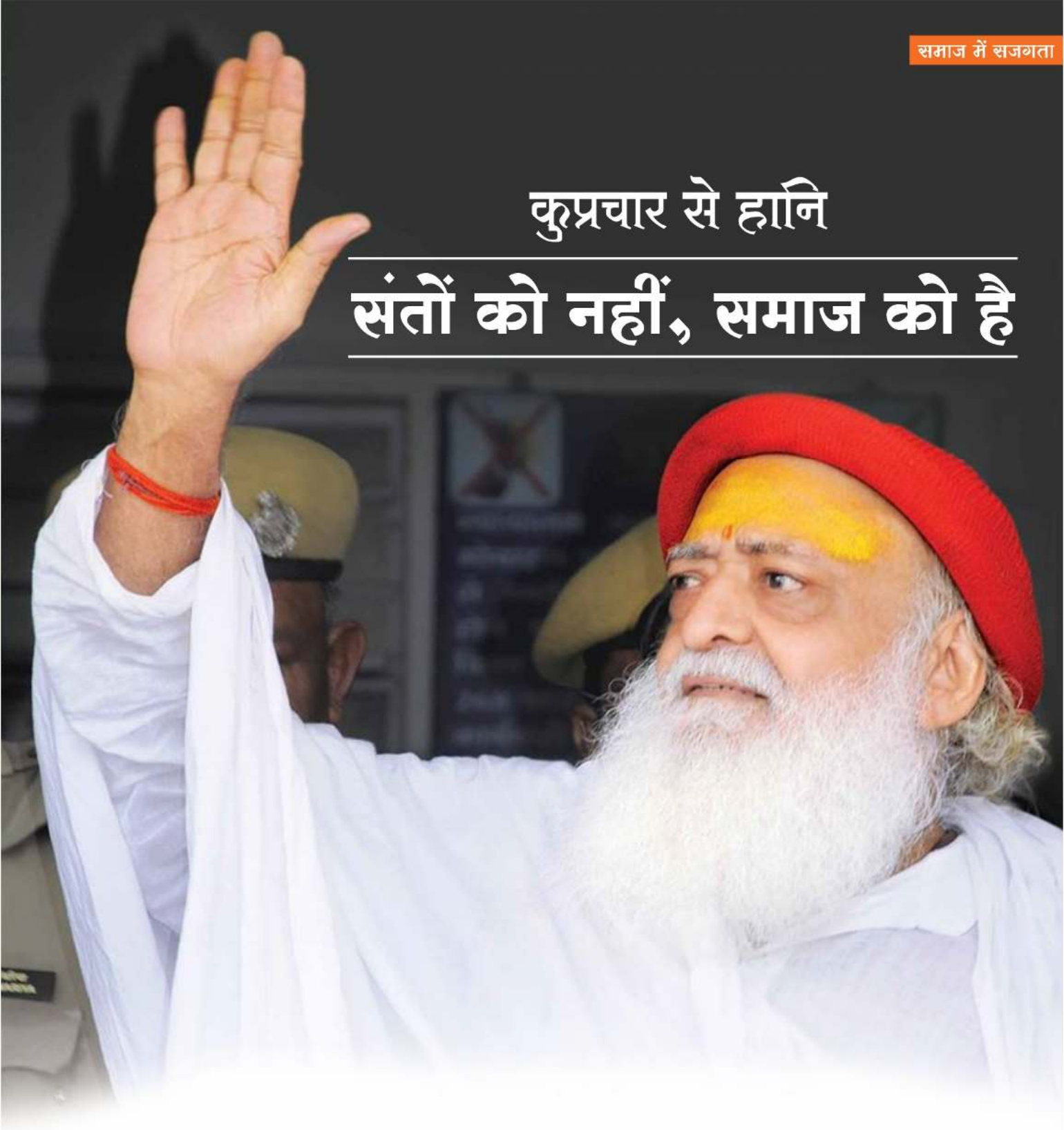

कुप्रचार से हानि
संतों को नहीं, समाज को है

एक महात्मा गृहस्थ आश्रम में रहते थे । किसी व्यक्ति ने उनके पास जाकर कहा : ''बाबाजी ! सनातन धर्म का कुप्रचार करनेवाले लोग कहते हैं कि 'रामायण सच्ची नहीं है ।' वे लोग अपना उल्लू सीधा करते हैं यह तो हम जानते हैं लेकिन बाबाजी ! जब हम बार-बार सुनते हैं तो कभी-कभी लगता है कि यह बात सच्ची है क्या ?''

वे एक सुलझे हुए महात्मा थे । बोले : ''मैं यह तो नहीं जानता कि रामायण सही है या गलत किंतु इससे मेरा जीवन सही हो गया है और जो इसका अध्ययन करता है उसका जीवन भी सही होता है । यही प्रमाण सच्चा है । रामायण के अनुसरण से मेरे कुटुम्ब में स्नेह बढ़ गया है, भाई-भाई में, पति-पत्नी में, पिता-पुत्र में मर्यादा और स्नेह बढ़ गया है और जरा-जरा-सी बात में जो दुविधा व मतभेद होते थे, कुटुम्ब में कलह होता था वह सब शांत हो

ज्ञानाग्नि में अहंकार जलाकर होली मनाओ !

होली छोटेपन-बड़प्पन की ग्रंथियों को हटाकर छोटे और बड़े की गहराई में जो सत्-चित्-आनंदस्वरूप परमात्मा है उसके उल्लास को, ज्ञान को, माधुर्य को जगाने का उत्सव है। होलिकोत्सव ने हजारों टूटे दिलों को जोड़ा है, हजारों अशांतों को शांति प्रदान की है, हजारों अहंकारियों को अहंकारशून्य करके सहज, नैसर्गिक जीवन जीने की प्रेरणा दी है।

१३ मार्च को होलिका दहन और १४ मार्च को धुलेंडी का पर्व है । यह स्वास्थ्य-संवर्धन, सामाजिक समरसता, आध्यात्मिक उन्नति की दृष्टि से उत्तम है । मानव-जीवन के सर्वांगीण विकास में इसका बहुत महत्त्व है। पूज्य बापूजी के सत्संग-वचनामृत में आता है :

होली छोटेपन-बड़प्पन की ग्रंथियों को हटाकर छोटे और बड़े की गहराई में जो सत्-चित्-आनंदस्वरूप परमात्मा है उसके उल्लास को, ज्ञान को, माधुर्य को जगाने का उत्सव है । होलिकोत्सव ने हजारों टूटे दिलों को जोड़ा है, हजारों अशांतों को शांति प्रदान की है, हजारों अहंकारियों को अहंकारशून्य करके सहज, नैसर्गिक जीवन जीने की प्रेरणा दी है। 'ये बड़े सेठ हैं, बड़े आदमी हैं, हम छोटे हैं' यह हीन भावना होली का उत्सव मिटा देता है तथा अहंकार शिथिल कर देता है।

लोग एकत्र होकर जब होलिकोत्सव मनाते हैं

पुरुषों को परेशान करने के लिए बलात्कार-कानूनों को बनाया जा रहा है हथियार : न्यायालय

इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कहा कि ''महिलाओं को कानूनी संरक्षण प्राप्त है इसलिए वे पुरुषों को आसानी से फँसाने में कामयाब हो जाती हैं। अदालतों में बड़ी संख्या में इस तरह के मामले सामने आ रहे हैं जिनमें महिलाएँ झूठे आरोपों के तहत प्राथमिकी दर्ज कराकर अनुचित लाभ उठाती हैं। कानून पुरुषों के प्रति बहुत पक्षपाती है।

कोई भी कानून जब पूर्वाग्रह व असमानता के आधार पर बनाया जाता है तो उसका दुरुपयोग होना सुनिश्चित है और वह फिर रक्षण की जगह शोषण का माध्यम बन जाता है।

हाल ही में बलात्कार की एक झूठी एफ.आई.आर. को खारिज करते हुए दिल्ली हाईकोर्ट ने चेताया कि ''यह स्थापित तथ्य है कि कुछ लोग बलात्कार-कानून का उपयोग अपने पुरुष समकक्षों को अनावश्यक रूप से परेशान करने के लिए एक हथियार के रूप में करते हैं।''

एक अन्य मामले में इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कहा कि ''महिलाओं को कानूनी संरक्षण प्राप्त है इसलिए वे पुरुषों को आसानी से फँसाने में कामयाब हो जाती हैं। अदालतों में बड़ी संख्या में इस तरह के मामले सामने आ रहे हैं जिनमें महिलाएँ झूठे आरोपों के तहत प्राथमिकी दर्ज कराकर अनुचित लाभ उठाती हैं। कानून पुरुषों के प्रति बहुत पक्षपाती है। प्राथमिकी में कोई भी बेबुनियाद आरोप लगाना और किसीको भी ऐसे

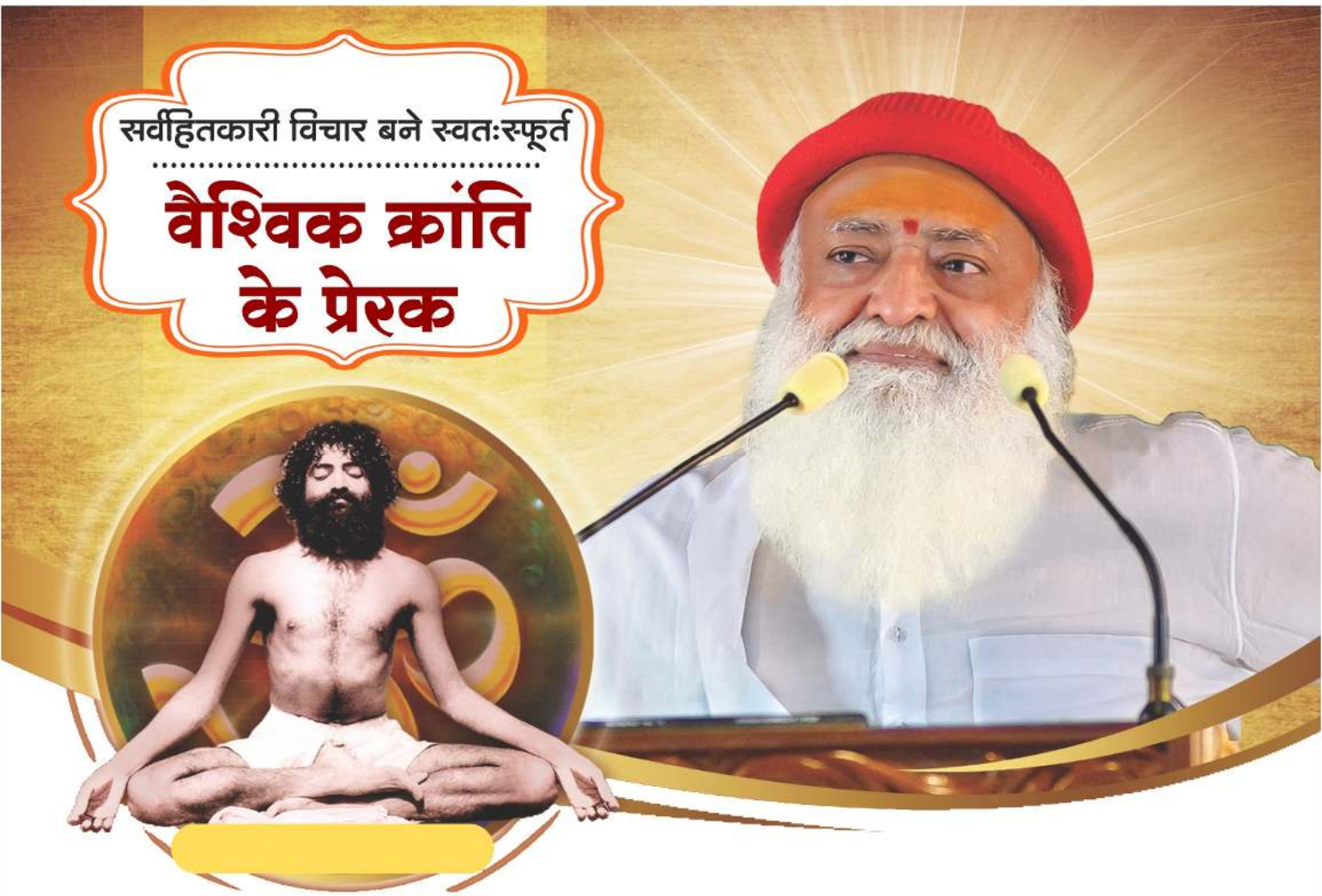

सर्वहितकारी विचार बने स्वतःस्फूर्त

वैश्विक क्रांति के प्रेरक

ये विश्वहितकारी विचार आज विश्वपटल पर 'संस्कार' बनकर हमारे देश और संस्कृति की पताका को लहरा रहे हैं फिर चाहे गुरुकुल शिक्षा व्यवस्था द्वारा सुसंस्कारित पीढ़ी का निर्माण हो या युवाधन सुरक्षा तथा व्यसनमुक्ति अभियान से चरित्रवान, स्वस्थ समाज का निर्माण अथवा दिव्य शिशु संस्कार अभियान, बाल संस्कार केन्द्रों, बाल मंडलों द्वारा नष्टप्राय संस्कृति का पुनरुत्थान हो।

हर व्यक्ति, परिवार, समाज व देश अपना हित चाहता है; मंगल की अभिलाषा रखता है। वह कैसे हो इसका गहन विश्लेषण कर भारत के महापुरुषों ने साररूप निष्कर्ष बताया है कि

परहित बस जिन्ह के मन माहीं।
तिन्ह कहुँ जग दुर्लभ कछु नाहीं॥

जिनके मन में परहित का भाव है उनके लिए जगत में कुछ भी दुर्लभ नहीं है। उनका स्वयं का हित अपने-आप हो जाता है। अतः यथाशक्ति परहित करते हुए यदि सर्वहित के विचार किये जायें तो अपने एवं औरों के कल्याण के द्वार खुलने लगते हैं।

ब्रह्मवेत्ता महापुरुषों के चित्त से स्वतःस्फूर्त सृष्टि के प्रत्येक जीव के कल्याण का सद्विचार सभीको सच्चा मार्ग दिखाता है। देवर्षि नारदजी के सद्विचार ने महर्षि वेदव्यासजी को श्रीमद्भागवत रचने की प्रेरणा दी, जिससे करोड़ों लोगों का भला हो रहा है। संत तुलसीदासजी के सद्विचार ने करोड़ों को शांति दी, 'रामायण' के रस से आनंदित कर दिया। ऐसे ही संत आशारामजी बापू

ब्रह्मवृक्ष पलाश

एक ऐसा वृक्ष जिसकी हर चीज है लाभकारी

पलाश रसायन (स्वास्थ्य-प्रदायक, वार्धक्य-निवारक तथा दीर्घायुप्रद), नेत्रज्योति बढ़ानेवाला व बुद्धिवर्धक है। यह हड्डियों को जोड़ने में सहायक ग्रहणी, बवासीर, कृमि आदि तकलीफों में भी यह उपयुक्त है। इसके फूल शीतल, कफ-पित्तनाशक तथा वीर्यवर्धक होते हैं।

पलाश भगवान ब्रह्माजी का प्रतीक माना जाता है इसलिए इसे ब्रह्मवृक्ष भी कहते हैं। पलाश का उपयोग यज्ञकर्मों के लिए किया जाता है। इसके पत्ते, फूल, फल, बीज, छाल, गोंद व जड़ औषधीय गुणों से युक्त होते हैं।

पलाश रसायन (स्वास्थ्य-प्रदायक, वार्धक्य-निवारक तथा दीर्घायुप्रद), नेत्रज्योति बढ़ानेवाला व बुद्धिवर्धक है। यह हड्डियों को जोड़ने में सहायक ग्रहणी, बवासीर, कृमि आदि तकलीफों में भी यह उपयुक्त है। इसके फूल शीतल, कफ-पित्तनाशक तथा वीर्यवर्धक होते हैं। ये प्यास और जलन को कम करनेवाले तथा रक्त-विकार व मूत्र संबंधी रोगों को दूर करते हैं। इनके सेवन से मूत्र खुलकर आता है। ये वातरक्त (gout) एवं त्वचा-रोगों में भी अत्यंत लाभकारी हैं।

पलाश के बीज कृमिनाशक एवं त्वचा-रोगों को

विद्यार्थियों के लिए विशेष उन्नतकारी साहित्य

महान विभूतियों के प्रेरक प्रसंगों से जीवन में करें सच्चरित्रता, आत्मसंयम, बौद्धिक कुशाग्रता, धर्मनिष्ठा जैसे दैवी गुणों का संचार

हमारे आदर्श | माँ-बाप को भूलना नहीं

बाल व युवा पीढ़ी को पतन की खाई से बचाकर उज्ज्वल भविष्य व सुखमय जीवन की ओर ले जानेवाला सत्साहित्य

पोषक तत्त्वों से भरपूर, स्वाद में लाजवाब

ईरानी मबरूम खजूर

✻ अनेक खनिज तत्त्वों, शर्करा, प्रोटीन्स, फाइबर्स, एंटी ऑक्सीडेंट्स और कई आवश्यक विटामिन्स से युक्त ✻ शक्ति-स्फूर्तिदायक ✻ रक्त, मांस व वीर्य वर्धक ✻ रोगप्रतिकारक शक्ति प्रदायक तथा कैंसररोधी गुण से युक्त ✻ दिमागी व मानसिक कार्यों को बेहतर बनाने में मददगार

सौभाग्य शुंठी पाक

उत्तम बलवर्धक व वात, पित्त, कफ के रोगों, बुखार, मूत्ररोग तथा नाक, कान, मुख, नेत्र व मस्तिष्क के रोगों एवं अन्य अनेक रोगों का नाशक ।

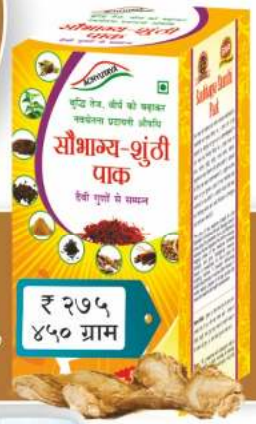

रसायनरहित (chemical free) **देशी गुड़** / **प्राकृतिक** **गुड़ की डली**

शुद्ध देशी गुड़ खाओ और खिलाओ !

बल-वीर्यवर्धक, वात-पित्तशामक, मूत्र की शुद्धि करनेवाला एवं नेत्र-हितकर । हड्डियों और मांसपेशियों को सशक्त बनाने में सहायक ।

हानिकारक चॉकलेट नहीं, बल, बुद्धि और उत्तम स्वास्थ्य प्रदायक गुड़ की डली खायें ।

ओजस्वी पेय (Herbal Tea)

यह मेधाशक्ति, नेत्रज्योति व ओज वर्धक तथा जठराग्नि-प्रदीपक, हृदय-बलवर्धक, रक्तशुद्धिकर, अस्थि-पुष्टिकारक, पाचक व कृमिनाशक है ।

आँवला रस

दीर्घायु व यौवन प्रदाता, विविध रोगों में लाभदायी

यह वीर्यवर्धक, त्रिदोषशामक व गर्मीशामक है । इसके सेवन से आँखों व पेशाब की जलन, अम्लपित्त (hyperacidity), श्वेतप्रदर, रक्तप्रदर, बवासीर आदि पित्तजन्य अनेक विकारों में लाभ होता है ।

भूखवर्धक, रोगप्रतिकारक शक्ति वर्धक, हृदय के लिए हितकर

पंचरस

मधुमेह, हृदय की रक्तवाहिनियों के अवरोध, उच्च रक्तचाप, रक्त में वसा (fat) का बढ़ना आदि रोगों में लाभप्रद । पाचनशक्तिवर्धक, कृमिनाशक एवं रक्तशुद्धिकर अनुभूत रामबाण योग ।

रजत मालती

शुद्ध रजत भस्म से युक्त रजत मालती गोलियाँ आयुष्य, बुद्धि, नेत्रज्योति, वीर्य व कांति वर्धक हैं । ये रक्त को बढ़ाती हैं, मांसपेशियों को ताकत देती हैं । मस्तिष्क, नेत्र, मूत्रपिंड एवं वातवहनाड़ियों के लिए बल्य हैं । रक्ताल्पता (anaemia), पक्षाघात (paralysis), ऐंठन, धातुक्षयजन्य दुर्बलता, नेत्ररोग, हिस्टीरिया, वार्धक्यजन्य रोग, नपुंसकता आदि में विशेष लाभदायी हैं । श्रम, पढ़ाई, रात्रि-जागरण, शोक, भय आदि से उत्पन्न तकलीफों में खास फायदेमंद हैं ।

उपरोक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से तथा समितियों से प्राप्त हो सकती है । अन्य उत्पादों व उनके लाभ आदि की विस्तृत जानकारी के लिए एवं घर बैठे रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा सामग्री-प्राप्ति हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com या सम्पर्क करें : ९४२८८५७८२०. ई-मेल : contact@ashramestore.com

जन-जन ने किया तुलसी का सत्कार, व्यक्त किया पूज्य बापूजी का आभार।

RNI No. 66693/97
RNP No. GAMC-1253-A/2024-2026
Issued by SSPO's-Ahmedabad City Dn.
Valid up-to 31-12-2026
WPP No. 02/24-26
(Issued by CPMG UK. valid up-to 31-12-2026)
Posting at Dehradun G.P.O. between 18th to 25th of every month.
Publishing on 15th of every month

विश्वव्यापी तुलसी पूजन दिवस

ध्यान योग शिविर एवं तुलसी पूजन कार्यक्रम (सूरत)

श्री अवधेशजी गुप्त, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, गौ-रक्षा विभाग, विहिप

अहमदाबाद

जयपटना (ओड़िशा)

फरीदाबाद

लंदन

श्री संतोष गंगवार, राज्यपाल, झारखंड

सम्भाजीनगर (महा.)

भोपाल

कैलिफोर्निया (यू.एस.ए.)

बक्सर (बिहार)

अरुणाचल प्रदेश

चौलियागंज, जि. कटक (ओड़िशा)

ब्रैम्पटन (कनाडा)

नर्मदापुरम् (म.प्र.)

पंचेड़, जि. रतलाम (म.प्र.)

राजनांदगाँव (छ.ग.)

दुबई

रेवाड़ी (हरियाणा)

नागपुर (महा.)

पटियाला

नेपाल

ठाणे (महा.)

भावनगर (गुज.)

बालोद (छ.ग.)

बोरीवली-मुंबई

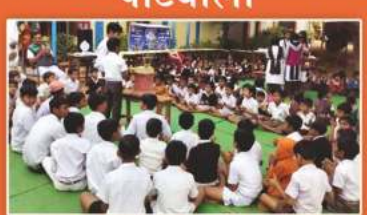

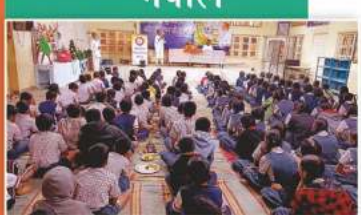

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/seva देखें।
आश्रम, समितियाँ एवं साधक-परिवार अपने सेवाकार्यों की तस्वीरें sewa@ashram.org पर ई-मेल करें।

आश्रम के मासिक प्रकाशन की सदस्यता हेतु स्कैन करें : लोक कल्याण सेतु ऋषि प्रसाद ऋषि दर्शन

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम **प्रकाशक और मुद्रक :** राकेशसिंह आर. चंदेल **प्रकाशन-स्थल :** संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात) **मुद्रण-स्थल :** हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५ **सम्पादक :** रणवीर सिंह चौधरी